



NAAC A+
Accredited University

तृतीय अंतर्राष्ट्रीय नदी कांग्रेस में प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति
प्रो. एस.आर. बसु मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित

प्रतिवेदन

विशेष व्याख्यान, अकादमिक एवं शोध साझेदारी
हेतु श्रीलंका भ्रमण

08-09 नवम्बर 2024



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)
(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

श्रीलंका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नदी कांग्रेस में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, प्रो. एस. आर. बसु मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन एवं इस क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रो. एस.



आर. बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केलानिया विश्वविद्यालय श्रीलंका में डा. सत्यांजल पांडे, डिप्टी हाई कमीशनर, हाई कमीशन ऑफ इंडिया इन श्री लंका प्रो. प्रशांती नारनगोडा, डायरेक्टर तथा अध्यक्ष, काउंसिल ऑफ मैनेजमेंट एनसीएस शिक्षा मंत्रालय, श्रीलंका कुलपति प्रो. नीलांथी रेनुका डि सिलवा तथा डा. बिस्वजीत राय चौधरी, अध्यक्ष साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर दक्षिण एशियाई देशों के विभिन्न प्रतिनिधि, केलानिया विश्वविद्यालय के विभिन्न केंद्रों के निदेशक, संकाय सदस्य, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि प्रो. नीलिमा गुप्ता एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने चार दशक से अधिक समय तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध करके प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डब्लूडब्लूएफ, एनजीटी को अपने बहुमूल्य शोध परिणामों को उपलब्ध करवाया और भारत सरकार यूजीसी, आईएनएसए, डीएसटी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा राज्य सरकार (उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद) द्वारा स्वीकृत कई परियोजनाएं सफलतापूर्वक संचालित कीं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस भी स्वीकृत हुआ जिससे उन्होंने जल प्रदूषण तथा मत्स्य स्वास्थ्य पर उच्च



कोटि की प्रयोगशाला स्थापित की। मछली में पाए जाने वाले परजीवियों पर शोध करके 51 नई स्पीसीज (प्रजातियों) की खोज के लिए पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्गीकरण के सर्वोच्च सम्मान ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया।

80 से अधिक सम्मानों से विभूषित, मध्य प्रदेश की पहली महिला मानद कर्नल कमांडेंट, बी डब्ल्यू एजुकेशन द्वारा भारत की शीर्ष 50 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में शामिल, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न आदि अनेक सम्मानों से विभूषित



प्रो. नीलिमा गुप्ता उच्च कोटि की वैज्ञानिक हैं। एक ओर जहाँ उन्होंने उत्कृष्ट शोध कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर, समाज से जुड़कर किसानों को लाभान्वित भी किया। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे स्टैनफोर्ड



यूनिवर्सिटी द्वारा दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों में सम्मिलित हैं तथा रिसर्च गेट द्वारा 'लिनेनियन टैक्सोनोमी पर सबसे अधिक पढ़े गए (1,123) शोध आइटम' संदर्भित किए गए हैं।

मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है बढ़ते जल प्रदूषण का समन्वित प्रबंधन- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट-सेंटर फॉर रिवर अफेयर्स के आमंत्रण पर श्रीलंका के केलानिया विश्वविद्यालय में 8-9 नवंबर 2024 को आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय रिवर कांग्रेस के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्तव्य दिया।



उन्होंने नदी प्रदूषण आर्थिक स्थिरता के लिए जलीय जीव स्वास्थ्य को बनाए रखने के कारण और नियंत्रण विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भारत में गंगा नदी का स्थान लोगों के जीवन में सदियों से पवित्र नदी के रूप में रहा है। हमारे पूर्वज पहले नदी का जल ग्रहण करते थे, फिर उनका स्थान कुओं ने लिया, फिर हम

नल का उपयोग करने लगे और आज हम पीने के लिए बोतल बंद पानी इस्तेमाल करते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी यह परिवर्तन हमें स्वच्छ जल के भविष्य के प्रति कई गहरे संकेत करता है।

उन्होंने भारत में नदियों की व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए इंडस बेसिन, गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना बेसिन और कावेरी, कृष्णा, गोदावरी सहित अन्य बेसिनों एवं इसके परिक्षेत्र, इनकी सहायक नदियों, इनके महत्व और इन जल स्रोतों के समक्ष आ रही चुनौतियों को रेखांकित करते हुए विस्तारपूर्वक चर्चा की।

उन्होंने नदियों में पाए जाने वाले जलीय जीवों विशेष रूप से मछलियों एवं अकशेरुकी प्राणियों की भी चर्चा की। उन्होंने जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में नदियों के महत्व, भूमिका और योगदान पर चर्चा करते हुए कहा कि नदियां विविध जलीय जीव प्रजातियों को न केवल आवास प्रदान करती हैं बल्कि खनिज और पोषक तत्वों की आपूर्ति को बनाए रखने में, बाढ़ के क्षेत्रों और आर्द्र भूमि के जलस्तर को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। नदियों की पारिस्थितिकी जलवायु परिवर्तन अनुकूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उन्होंने कहा कि औद्योगिक कचरे, कृषि में उपयोग किए जाने वाले उर्वरक, कीटनाशक, शहरी इलाकों से निकलने वाले दूषित जल, प्लास्टिक और ठोस वर्ज्य पदार्थ आज भारत की नदियों के लिए खतरा बनी हुई हैं। उन्होंने विभिन्न कर्मकांडों, धार्मिक क्रिया कलापों, मूर्ति विसर्जन, शव विसर्जन जैसे उदाहरण देते हुए कहा कि जिस गंगा जल को हम पूजते हैं, पीने में उपयोग करते हैं क्या वह आज स्वस्थ, स्वच्छ और पवित्र बची रह गई है?

उपरोक्त तथ्यों एवं प्रश्नों के साथ उन्होंने जलीय जीवों विशेष रूप से मछलियों पर किए गए अपने शोध को प्रस्तुत किया। नदियों और जलीय जीवों पर यूजीसी, डीएसटी, एआईसीटीई, पर्यावरण और वन मंत्रालय, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद जैसी कई संस्थाओं द्वारा पोषित परियोजना कार्यों, उनकी प्रविधि और उनके निष्कर्षों पर उन्होंने विस्तारपूर्वक चर्चा की। जल प्रदूषण के विभिन्न कारकों, जलीय जीवों एवं जलीय वनस्पतियों पर होने वाले इसके दुष्प्रभावों, मछलियों के

जीवन, उनकी शारीरिकी पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों, जैव विविधता के क्षरण, जल की गुणवत्ता में परिवर्तन, लुप्त होती मछलियों की प्रजातियों जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल करते हुए उन्होंने भारत की नदियों की वास्तविक स्थिति को दर्शाया और कहा कि आज भारत की अधिकांश नदियां गहरे प्रदूषण से युक्त हैं। कई नदियों का जल बिल्कुल ही उपयोगी नहीं बचा है और आज हम पारिस्थितिकीय आपदा के दौर से गुजर रहे हैं। पिछले कई दशकों में गंगा नदी के प्रदूषण की स्थितियों को बतलाते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा चलाए गए नमामि गंगे जैसी परियोजनाओं, जल प्रदूषण से संबंधित विभिन्न कानूनों, जन जागरूकता, शहरी क्षेत्रों के प्रदूषण की रोकथाम के लिए किए गए प्रबंधन जैसे सरकारी प्रयासों और प्रभावों का भी उल्लेख किया।

उन्होंने जल प्रदूषण की रोकथाम एवं जलीय जीवों के संरक्षण के लिए कई नवाचारी तकनीक, प्रविधियों, प्रबंधन और नियमन के तरीकों को भी बताया। नदी जल प्रदूषण से होने वाले आर्थिक खतरों जैसे मत्स्य पालन उद्योग पर संकट, जल आधारित उद्योग, हाइड्रो पावर, जल के कारण होने वाले स्वास्थ्य, कृषि इत्यादि पर होने वाले संकट को भी उन्होंने रेखांकित किया। उन्होंने स्वच्छ गंगा अभियान की कई क्रियात्मक गतिविधियों की चर्चा की। जलीय जीवों को होने वाले नुकसान, बढ़ते पारिस्थितिकीय असंतुलन और इसके खतरे के प्रति चलाए गए जन जागरूकता अभियानों का भी उन्होंने उल्लेख किया। अंत में उन्होंने नदियों को स्वच्छ रखने के सामूहिक और नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित किया।

हाई कमीशन से चर्चा: केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा श्रीलंकन विश्वविद्यालयों के बीच समझौते की पहल

अंतराष्ट्रीय कांग्रेस में श्री लंका में इंडियन हाई कमीशनर, डॉ. सत्यांजल पांडे से कुलपति की विस्तृत चर्चा के दौरान कुलपति ने डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में चल रहे शोध एवं अकादमिक गतिविधियों को साझा किया तथा श्रीलंकन विश्वविद्यालयों के साथ समझौते की पहल की। उन्होंने केलानिया विश्वविद्यालय तथा नागानंदा इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के कुलपति/निदेशक से समझौते के बिन्दुओं पर चर्चा कर निकट भविष्य में विश्वविद्यालय के बीच समझौते का आश्वासन दिया। कुलपति ने दोनों विश्वविद्यालयों का भ्रमण कर निदेशक प्रो. रंगामिनी वेरावेट्टा तथा कुलपति प्रो. नीलांथी रेनुका डी सिलवा से विश्वविद्यालयों की आधारभूत सुविधाओं के बारे में भी चर्चा की। भविष्य में केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा श्रीलंकन विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक तथा शोध समझौते के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा यूजीसी रेगुलेशन के आधार पर डुअल डिग्री प्रोग्राम, ज्वाइंट डिग्री प्रोग्राम संचालित कर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को लाभ मिल सकेगा।

-----//-----

आयोजन

श्रीलंका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नदी कांग्रेस में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को किया सम्मानित

नदियों में किए शोध व अध्यक्ष के लिए मिला लाइफटाइम अवार्ड

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन एवं इस क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रो. एसआर बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया है। प्रो. नीलिमा गुप्ता एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने चार दशक से अधिक समय तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध करके प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डब्लूडब्ल्यूएफ, एनजीटी को अपने बहुमूल्य शोध परिणामों को उपलब्ध करवाया और भारत सरकार यूजीसी, आईएनएसए, डीएसटी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय और राज्य सरकार



श्रीलंका में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सम्मानित किया गया। • नवदुनिया

(उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद) द्वारा स्वीकृत कई परियोजनाएं सफलतापूर्वक संचालित की। मछलियों पर शोध करके प्रयोगशाला स्थापित की: प्रो. गुप्ता के शोध से उत्तर प्रदेश सरकार के लिए सेंटर

आफ़ एक्सीलेंस भी स्वीकृत हुआ जिससे उन्होंने जल प्रदूषण व मत्स्य स्वास्थ्य पर उच्च कोटि की प्रयोगशाला स्थापित की। मछली में पाए जाने वाले परजीवियों पर शोध करके 51 नई स्पीसीज (प्रजातियों) की खोज के लिए

पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्गीकरण के सर्वोच्च सम्मान ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया। एक ओर जहां प्रो. गुप्ता ने उत्कृष्ट शोध कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर, समाज से लगातार जुड़कर कई किसानों को लाभान्वित भी किया। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत विज्ञानियों में सम्मिलित हैं। 80 से अधिक सम्मानों से विभूषित, मध्य प्रदेश की पहली महिला मानद कर्नल कमांडेंट, बी डब्ल्यू एजुकेशन द्वारा भारत की शीर्ष 50 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में शामिल, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न आदि सम्मानों से विभूषित हैं।

यह रहे मौजूद

यह सम्मान केलानिया विश्वविद्यालय श्रीलंका में डा. सत्यांजल पांडे, डिप्टी हाई कमीशनर, हाई कमीशन आफ इंडिया इन श्रीलंका प्रो. प्रशांथी नारनगोडा, डायरेक्टर व अध्यक्ष, काउंसिल आफ मेनेजमेंट एनसीएसएस शिक्षा मंत्रालय, श्रीलंका कुलपति प्रो. नीलाथी रेनुका डिसिलवा, डा. बिस्वजीत राय चैधरी, अध्यक्ष साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर दक्षिण एशियाई देशों के विभिन्न प्रतिनिधि, केलानिया विश्वविद्यालय के विभिन्न केंद्रों के निदेशक, संकाय सदस्य, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे।

नदियों पर किए गए उनके शोध व अध्ययन के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया

श्रीलंका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नदी कांग्रेस में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, प्रो. एसआर बसु मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित

हरिभूमि न्यूज • सागर

डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन एवं इस क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रो. एस. आर. बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केलानिया विश्वविद्यालय श्रीलंका में डा. सत्यांजल पांडे, डिप्टी हाई कमीशनर, हाई कमीशन ऑफ इंडिया इन श्रीलंका प्रो. प्रशांथी नारनगोडा, डायरेक्टर तथा अध्यक्ष, काउंसिल ऑफ मेनेजमेंट एनसीएसएस शिक्षा मंत्रालय, श्रीलंका कुलपति प्रो. नीलाथी रेनुका डिसिलवा तथा डा. बिस्वजीत राय चैधरी, अध्यक्ष साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर दक्षिण एशियाई देशों के विभिन्न प्रतिनिधि, केलानिया विश्वविद्यालय के विभिन्न केंद्रों के निदेशक, संकाय सदस्य, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक



उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि प्रो. नीलिमा गुप्ता एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने चार दशक से अधिक समय तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध करके प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डब्लूडब्ल्यूएफ, एनजीटी को अपने बहुमूल्य शोध परिणामों को उपलब्ध करवाया और भारत सरकार यूजीसी, आईएनएसए,

डीएसटी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा राज्य सरकार (उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद) द्वारा स्वीकृत कई परियोजनाएं सफलतापूर्वक संचालित कीं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस भी स्वीकृत हुआ जिससे उन्होंने जल प्रदूषण तथा मत्स्य स्वास्थ्य पर उच्च

कोटि की प्रयोगशाला स्थापित की। मछली में पाए जाने वाले परजीवियों पर शोध करके 51 नई स्पीसीज (प्रजातियों) की खोज के लिए पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्गीकरण के सर्वोच्च सम्मान ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया।

80 से अधिक सम्मानों से विभूषित, मध्य प्रदेश की पहली महिला मानद कर्नल कमांडेंट, बी डब्ल्यू एजुकेशन द्वारा भारत की शीर्ष 50 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में शामिल, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न आदि अनेक सम्मानों से विभूषित प्रो. नीलिमा गुप्ता उच्च कोटि की वैज्ञानिक हैं। एक ओर जहां उन्होंने उत्कृष्ट शोध कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर, समाज से जुड़कर किसानों को लाभान्वित भी किया। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों में सम्मिलित हैं तथा रिसर्च गेट द्वारा 'लिनैनेयन टैक्सोनोमी' पर सबसे अधिक पढ़े गए (1,123) शोध आइटम संदर्भित किए गए हैं।



कुलपति को श्रीलंका में सम्मान

नवभारतन्यूज सागर, 12 नवंबर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए शोध और अध्ययन के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट ने प्रो. एसआर बसु मेमोरियल

लाइफ टाइम अवॉर्ड से सम्मानित किया है।

यह सम्मान श्रीलंका के केलानिया विश्वविद्यालय में हुए अंतरराष्ट्रीय नदी कांग्रेस में उन्हें दिया गया. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा ने चार दशक तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध किया.

कुलपति प्रो. गुप्ता श्रीलंका में प्रो. बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन एवं इस क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रो. एसआर बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केलानिया विश्वविद्यालय श्रीलंका में हाई कमीशन ऑफ इंडिया के डिप्टी कमिश्नर डॉ. सत्यांजल पांडे, डायरेक्टर तथा काउंसिल ऑफ मैनेजमेंट एनसीएस शिक्षा मंत्रालय के अध्यक्ष प्रो. प्रशांती नारनगोडा, कुलपति प्रो. नीलांथी रेनुका डिसिलवा तथा साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट के अध्यक्ष डॉ. बिस्वजीत राय चौधरी द्वारा दिया गया।

श्रीलंका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नदी कांग्रेस में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, प्रो. एस. आर. बसु मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित

दैनिक प्रदेश वॉच सागर संवाददाता। सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन एवं इस क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रो. एस. आर. बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया. यह सम्मान केलानिया विश्वविद्यालय श्रीलंका में डा. सत्यांजल पांडे, डिप्टी हाई कमीशनर, हाई कमीशन ऑफ इंडिया इन श्री लंका प्रो. प्रशांती नारनगोडा, डायरेक्टर तथा अध्यक्ष, काउंसिल ऑफ मैनेजमेंट एनसीएस शिक्षा मंत्रालय, श्रीलंका कुलपति प्रो. नीलांथी रेनुका डिसिलवा तथा डा. बिस्वजीत राय चौधरी, अध्यक्ष साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रदान किया गया. इस अवसर पर दक्षिण एशियाई देशों के विभिन्न प्रतिनिधि, केलानिया विश्वविद्यालय के विभिन्न केंद्रों के निदेशक, संकाय सदस्य, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि प्रो. नीलिमा गुप्ता एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने चार दशक से अधिक समय तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध करके प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डब्लूडब्ल्यूएफ, एनजीटी को अपने बहुमूल्य शोध परिणामों को उपलब्ध करवाया और भारत सरकार यूजीसी, आईएनएसए, डीएसटी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा

राज्य सरकार (उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद) द्वारा स्वीकृत कई परियोजनाएं सफलतापूर्वक संचालित कीं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस भी स्वीकृत हुआ जिससे उन्होंने जल प्रदूषण तथा मत्स्य स्वास्थ्य पर उच्च कोटि की प्रयोगशाला स्थापित की। मछली में पाए जाने वाले परजीवियों पर शोध करके 51 नई स्पीसीज (प्रजातियों) की खोज के लिए पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्गीकरण के सर्वोच्च सम्मान ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया. 80 से अधिक सम्मानों से विभूषित, मध्य प्रदेश की पहली महिला मानद कर्नल कमांडेंट, बी डब्ल्यू एजुकेशन द्वारा भारत की शीर्ष 50 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में शामिल, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न आदि अनेक सम्मानों से विभूषित प्रो. नीलिमा गुप्ता उच्च कोटि की वैज्ञानिक हैं। एक ओर जहाँ उन्होंने उत्कृष्ट शोध कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर, समाज से जुड़कर किसानों को लाभान्वित भी किया। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों में सम्मिलित हैं तथा रिसर्च गेट द्वारा 'लिनेनियन टैक्सोनोमी पर सबसे अधिक पढ़े गए (1,123) शोध आइटम' संदर्भित किए गए हैं।

श्रीलंका में कुलपति को सम्मानित किया

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन एवं इस क्षेत्र में अद्वितीय योगदान के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रो. एस. आर. बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केलानिया विश्वविद्यालय श्रीलंका में डा. सत्यांजल पांडे, डिप्टी हाई कमीशनर, हाई कमीशन ऑफ इंडिया इन श्रीलंका प्रो. प्रशांथी नारनगोडा, डायरेक्टर तथा अध्यक्ष, काउंसिल ऑफ मैनेजमेंट एनसीएस शिक्षा मंत्रालय, श्रीलंका कुलपति प्रो. नीलांथी रेनुका डिसिलवा तथा डा. बिस्वजीत राय चौधरी, अध्यक्ष साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर दक्षिण एशियाई देशों के विभिन्न प्रतिनिधि, केलानिया विश्वविद्यालय के विभिन्न केंद्रों के निदेशक, संकाय सदस्य, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि प्रो. नीलिमा गुप्ता एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने चार दशक से अधिक समय तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध करके प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, एनजीटी को अपने बहुमूल्य शोध परिणामों को उपलब्ध करवाया और भारत सरकार यूजीसी,



आईएनएसए, डीएसटी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा राज्य सरकार (उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद) द्वारा स्वीकृत कई परियोजनाएं सफलतापूर्वक संचालित कीं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उन्हें सेंटर ऑफ एक्सीलेंस भी स्वीकृत हुआ जिससे

उन्होंने जल प्रदूषण तथा मत्स्य स्वास्थ्य पर उच्च कोटि की प्रयोगशाला स्थापित की। मछली में पाए जाने वाले परजीवियों पर शोध करके 51 नई स्पीसीज (प्रजातियों) की खोज के लिए पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्गीकरण के सर्वोच्च सम्मान ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया। 80 से अधिक सम्मानों से विभूषित, मध्य प्रदेश की पहली

महिला मानद कर्नल कमांडेंट, बी डब्ल्यू एजुकेशन द्वारा भारत की शीर्ष 50 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में शामिल, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न आदि अनेक सम्मानों से विभूषित प्रो. नीलिमा गुप्ता उच्च कोटि की वैज्ञानिक हैं। एक ओर जहाँ उन्होंने उत्कृष्ट शोध कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर, समाज से जुड़कर किसानों को लाभान्वित भी किया। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों में सम्मिलित हैं तथा रिसर्च गेट द्वारा 'लिनेनियन टैक्सोनोमी पर सबसे अधिक पढ़े गए (1,123) शोध आइटम' संदर्भित किए गए हैं।

कुलपति श्रीलंका में हुई सम्मानित



सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किये गये शोध और अध्ययन के लिये श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट ने प्रो. एसआर बसु मेमोरियल लाइफ टाइम अवॉर्ड से सम्मानित किया है। यह सम्मान श्रीलंका के केलानिया विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नदी कांग्रेस में उन्हें दिया गया। दरअसल प्रो. नीलिमा गुप्ता ने चार दशक से अधिक समय तक गंगा नदी के प्रदूषण पर शोध किया। प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, एनजीटी को अपने शोध परिणामों को उपलब्ध करवाया और भारत सरकार यूजीसी, आईएनएसए, डीएसटी, पर्यावरण व वन मंत्रालय, राज्य सरकार उप्र कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा स्वीकृत कई परियोजनायें सफलतापूर्वक संचालित कीं। उप्र सरकार ने उन्हें सेंटर ऑफ एक्सीलेंस भी स्वीकृत किया। जिससे उन्होंने जल प्रदूषण और मत्स्य स्वास्थ्य पर उच्च कोटि की प्रयोगशाला स्थापित की। मछली में पाये जाने वाले परजीवियों पर शोध करके 51 नई स्पीसीज प्रजातियों की खोज के लिये पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्गीकरण के सर्वोच्च सम्मान ईके जानकी अम्मल राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया है। प्रो. गुप्ता को 80 से अधिक सम्मान मिल चुके हैं। इसमें उन्हें मप्र की पहली महिला मानद कर्नल कमांडेंट, बीडब्ल्यू एजुकेशन द्वारा भारत की शीर्ष 50 सबसे प्रभावशाली महिलाओं में शामिल किया, सरस्वती सम्मान, विज्ञान रत्न आदि अनेक सम्मानों से उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा दुनिया के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों में शामिल हैं।

श्रीलंका में प्रो. नीलिमा को मिला मेमोरियल लाइफटाइम अवॉर्ड

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता को नदियों पर किए गए उनके शोध एवं अध्ययन के लिए श्रीलंका के साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट ने प्रो. एसआर बसु मेमोरियल लाइफटाइम अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केलानिया विवि श्रीलंका में डिप्टी हाई कमीशनर डॉ. सत्यांजल पांडे, हाई कमीशन ऑफ इंडिया इन श्रीलंका प्रो. प्रशांथी नारनगोडा, श्रीलंका कुलपति प्रो. नीलांथी रेनुका डिसिलवा एवं डॉ. विश्वजीत राय चौधरी ने प्रदान किया गया। इस अवसर पर दक्षिण एशियाई देशों के विभिन्न प्रतिनिधि, केलानिया विवि के विभिन्न केंद्रों के निदेशक, संकाय सदस्य, शोधकर्ता एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे।

नदी, कुआं, नल के बाद हम आज बोतल बंद पानी का इस्तेमाल कर रहे हैं, यह परिवर्तन कई गहरे संकेत करता है: कुलपति

भास्कर संवाददाता/सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने श्रीलंका के



केलानिया विश्वविद्यालय में तीसरी अंतरराष्ट्रीय रिवर कांग्रेस के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्तव्य दिया। साथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट-सेंटर फॉर रिवर अफेयर्स के आमंत्रण पर पहुंची कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा भारत में गंगा नदी का स्थान लोगों के जीवन में सदियों से पवित्र नदी के रूप में रहा है।

हमारे पूर्वज पहले नदी का जल

ग्रहण करते थे, फिर उनका स्थान कुओं ने लिया, फिर हम नल का उपयोग करने लगे और आज हम पीने के लिए बोतल बंद पानी इस्तेमाल करते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी यह परिवर्तन हमें स्वच्छ जल के भविष्य के प्रति कई गहरे संकेत करता है। उन्होंने भारत में नदियों की व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए इंडस बेसिन, गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघ ना बेसिन और कावेरी, कृष्णा, गोदावरी सहित अन्य बेसिनों एवं इसके परिक्षेत्र, इनकी सहायक नदियों, इनके महत्व और इन जल स्रोतों के समक्ष आ रही चुनौतियों को रेखांकित करते हुए विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा कि नदियां विविध जलीय जीव प्रजातियों को न केवल आवास प्रदान करती हैं

बल्कि खनिज और पोषक तत्वों की आपूर्ति को बनाए रखने में, बाढ़ के क्षेत्रों और आर्द्र भूमि के जलस्तर को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। नदियों की पारिस्थितिकी जलवायु परिवर्तन अनुकूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा औद्योगिक कचरे, कृषि में उपयोग किए जाने वाले उर्वरक, कीटनाशक, शहरी इलाकों से निकलने वाले दूषित जल, प्लास्टिक और ठोस वर्ज्य पदार्थ आज भारत की नदियों के लिए खतरा बने हुए हैं। उन्होंने विभिन्न कर्मकांडों, धार्मिक क्रियाकलापों, मूर्ति विसर्जन, शव विसर्जन जैसे उदाहरण देते हुए कहा कि जिस गंगा जल को हम पूजते हैं, पीने में उपयोग करते हैं, क्या वह आज

स्वस्थ, स्वच्छ और पवित्र बचा रह गया है? अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस में श्रीलंका में इंडियन हाई कमिशनर डॉ. सत्यांजल पांडे से कुलपति की विस्तृत चर्चा के दौरान कुलपति ने डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में चल रहे शोध एवं अकादमिक गतिविधियों को साझा किया तथा श्रीलंका विश्वविद्यालयों के साथ समझौते की पहल की। भविष्य में केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा श्रीलंका के विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक तथा शोध समझौते के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा यूजीसी रेगुलेशन के आधार पर ड्युअल डिग्री प्रोग्राम, ज्वाइंट डिग्री प्रोग्राम संचालित कर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को लाभ मिल सकेगा।

आयोजन । केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा श्रीलंका विश्वविद्यालयों के बीच समझौते की पहल

मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है बढ़ते जल प्रदूषण का समन्वित प्रबंधन: कुलपति गुप्ता

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने साउथ एशियन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट-सेंटर फॉर रिवर अफेयर्स के आमंत्रण पर श्रीलंका के केलानिया विश्वविद्यालय में 8-9 नवंबर 2024 को आयोजित तृतीय अंतरराष्ट्रीय रिवर कांग्रेस के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्तव्य दिया।

उन्होंने नदी प्रदूषण आर्थिक स्थिरता के लिए जलीय जीव स्वास्थ्य को बनाए रखने के कारण और नियंत्रण



विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भारत में गंगा नदी का स्थान लोगों के जीवन में सदियों से पवित्र नदी के रूप में रहा है। हमारे पूर्वज पहले नदी का जल ग्रहण करते थे, फिर उनका स्थान कुओं ने लिया, फिर हम नल का उपयोग करने लगे और आज हम पीने के लिए बोतल बंद पानी इस्तेमाल करते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी यह परिवर्तन हमें स्वच्छ जल के भविष्य के प्रति कई गहरे संकेत करता है। उन्होंने भारत में नदियों की व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए इंडस बेसिन, गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना बेसिन और कावेरी, कृष्णा, गोदावरी सहित अन्य बेसिनों एवं इसके परिक्षेत्र, इनकी सहायक नदियों, इनके महत्व और इन जल स्रोतों के समक्ष आ रही चुनौतियों को रेखांकित करते हुए विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने नदियों में पाए जाने वाले जलीय जीवों विशेष रूप से मछलियों एवं अकशरीक प्रणियों की भी चर्चा की। उन्होंने जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में नदियों के महत्व, भूमिका और योगदान पर चर्चा करते हुए कहा कि नदियां विविध जलीय जीव प्रजातियों को न केवल आवास प्रदान करती हैं बल्कि खनिज और पोषक तत्वों की आपूर्ति को बनाए रखने में, बाढ़ के क्षेत्रों और आर्द्र भूमि के जलस्तर को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। नदियों की पारिस्थितिकी जलवायु परिवर्तन अनुकूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक कचरे, कृषि में उपयोग किए जाने वाले उर्वरक, कीटनाशक, शहरी इलाकों से निकलने वाले दूषित जल, प्लास्टिक और ठोस वर्ज्य पदार्थ आज भारत की नदियों के लिए खतरा बनी हुई हैं। उन्होंने विभिन्न कर्मकांडों, धार्मिक क्रिया कलापों, मूर्ति विसर्जन, शव विसर्जन जैसे उदाहरण देते हुए कहा कि जिस

गंगा जल को हम पूजते हैं, पीने में उपयोग करते हैं क्या वह आज स्वस्थ, स्वच्छ और पवित्र बची रह गई है?

उपरोक्त तथ्यों एवं प्रश्नों के साथ उन्होंने जलीय जीवों विशेष रूप से मछलियों पर किए गए अपने शोध को प्रस्तुत किया। नदियों और जलीय जीवों पर यूजीसी, डीएसटी, एआईसीटीई, पर्यावरण और वन मंत्रालय, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद जैसी कई संस्थाओं द्वारा पोषित परियोजना कार्यों, उनकी प्रविधि और उनके निष्कर्षों पर उन्होंने विस्तारपूर्वक चर्चा की। जल प्रदूषण के विभिन्न कारकों, जलीय जीवों एवं जलीय वनस्पतियों पर होने वाले इसके दुष्प्रभावों, मछलियों के जीवन, उनकी शारीरिकी पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों, जैव विविधता के क्षण, जल की गुणवत्ता में परिवर्तन, लुप्त होती मछलियों की प्रजातियों जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल करते हुए उन्होंने भारत की नदियों की वास्तविक स्थिति को दर्शाया और कहा कि आज भारत की अधिकांश नदियां गहरे प्रदूषण से युक्त हैं। कई नदियों का जल बिल्कुल ही उपयोगी नहीं बचा है और आज हम पारिस्थितिकीय आपदा के दौर से गुजर रहे हैं। पिछले कई दशकों में गंगा नदी के प्रदूषण की स्थितियों को बतलाते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा चलाए गए नामाभि गंगा जैसी परियोजनाओं, जल प्रदूषण से संबंधित विभिन्न कानूनों, जन जागरूकता, शहरी क्षेत्रों के प्रदूषण को रोकथाम के लिए किए गए प्रयत्न जैसे सरकारी प्रयासों और प्रभावों का भी उल्लेख किया। उन्होंने जल प्रदूषण की रोकथाम एवं जलीय जीवों के संरक्षण के लिए कई नवाचारी तकनीक, प्रविधियों, प्रबंधन और नियमन के तरीकों को भी बताया। नदी जल प्रदूषण से होने वाले आर्थिक खतरों जैसे मत्स्य पालन उद्योग पर संकट, जल आधारित उद्योग, हाइड्रो पावर, जल के कारण होने वाले स्वास्थ्य, कृषि इत्यादि पर होने वाले संकट को भी उन्होंने रेखांकित किया। उन्होंने स्वच्छ गंगा अभियान की कई क्रियात्मक गतिविधियों की चर्चा की। जलीय जीवों को होने वाले नुकसान, बढ़ते पारिस्थितिकीय असंतुलन और इसके खतरों के प्रति चलाए गए जन जागरूकता अभियानों का भी उन्होंने उल्लेख किया। अंत में उन्होंने नदियों को स्वच्छ रखने के सामूहिक और नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित किया।

अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस में श्री लंका में इंडियन हाई कमिशनर, डॉ. सत्यांजल पांडे से कुलपति की विस्तृत चर्चा के दौरान कुलपति ने डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में चल रहे शोध एवं अकादमिक गतिविधियों को साझा किया तथा श्रीलंका विश्वविद्यालयों के साथ समझौते की पहल की। उन्होंने केलानिया विश्वविद्यालय तथा नागानंद इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के कुलपति/निदेशक से समझौते के बिन्दुओं पर चर्चा कर निकट भविष्य में विश्वविद्यालय के बीच समझौते का आश्वासन दिया। कुलपति ने दोनों विश्वविद्यालयों का भ्रमण कर निदेशक प्रो. रणमिनी वेगवेला तथा कुलपति प्रो. नीलाथी रेनुका डी सिलवा से विश्वविद्यालयों की आधारभूत सुविधाओं के बारे में भी चर्चा की।

भविष्य में केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा श्रीलंका विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक तथा शोध समझौते के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा यूजीसी रेगुलेशन के आधार पर डुअल डिग्री प्रोग्राम, ज्वाइंट डिग्री प्रोग्राम संचालित कर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को लाभ मिल सकेगा।

सोशल मीडिया लिंक –

<https://dainik.bhaskar.com/uIgbP4oCsOb>

<https://khabarkaasar.com/2024/11/sagar-university-vice-chancellor-prof-neelima-gupta-was-honoured-with-the-award-in-the-international-conference-held-in-sri-lanka/>

http://khabar1minit.blogspot.com/2024/11/blog-post_12.html

<https://sagarmirrornews.in/education/19502/>

<https://hindi.news18.com/news/madhya-pradesh/sagar-there-will-be-mou-between-sri-lankan-universities-and-sagar-university-research-will-be-done-on-religion-culture-buddhism-local18-8832984.html>

<https://www.etvbharat.com/hi/!state/sagar-harisingh-gour-university-will-signed-mou-with-srilanka-university-madhya-pradesh-news-mps24111305667>



SagarUniversity



DoctorGour



Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Email- mediaofficer@dhsgsu.edu.in

Website- www.dhsgsu.edu.in